भारत सरकार

इस्पात मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 2919

18 मार्च, 2025 को उत्तर के लिए

इस्पात उत्पादन में कोकिंग कोल

2919. श्री आदित्य यादव:

क्या **इस्पात** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या मंत्रालय ने इस्पात उत्पादन में कोकिंग कोल के उपयोग को कम करने के लिए कोई पहल की है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(ख) ऊर्जा दक्षता ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन में सुधार पर अधिक ध्यान देने के साथ स्वदेशी कोयले का उपयोग करके इस्पात निर्माण के लिए वैकल्पिक मार्गों को सुविधाजनक बनाने के लिए मंत्रालय द्वारा क्या प्रयास किए गए हैं/किए जा रहे हैं?

उत्तर

इस्पात राज्य मंत्री **(श्री भूपतिराजू श्रीनिवास वर्मा)**

(क) और (ख): इस्पात एक नियंत्रणमुक्त क्षेत्र होने के कारण, इस्पात संयंत्रों में तकनीकी उन्नयन के संबंध में निर्णय तकनीकी-वाणिज्यिक सोच-विचारों और बाजार की गतिशीलता के आधार पर प्रत्येक इस्पात कंपनियों द्वारा लिए जाते हैं।

भारतीय इस्पात क्षेत्र में स्वेदशी कोकिंग कोल के उपयोग को बढ़ाने, ऊर्जा दक्षता में सुधार करने और अकार्बनीकरण के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं:

i. कोयला कंपनियां और इस्पात उद्योग कोयले की राख की मात्रा को कम करने और इसे इस्पात उद्योग में उपयोग हेतु उपयुक्त बनाने के लिए घरेलू कोयला धुलाई क्षमता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इस्पात संयंत्रों में स्टाम्प चार्ज्ड कोक ओवन बैटरी का भी उपयोग किया जा रहा है, जिससे स्वदेशी कोकिंग कोयले का उपयोग बढ़ेगा।

ii. इस्पात मंत्रालय ने 2024 में "ग्रीनिंग द स्टील सेक्टर इन इंडिया: रोडमैप और कार्य योजना" शीर्षक से एक व्यापक रिपोर्ट जारी की, जिसमें इस्पात क्षेत्र के अकार्बनीकरण के लिए विभिन्न उपायों पर चर्चा की गई है और इस्पात क्षेत्र से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए रणनीति, कार्य योजना और रोडमैप तैयार किया गया है। यह रिपोर्ट इस्पात मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

*****